डॉ रूचिरा ढींगरा
एसोसिएट प्रोफेसर,हिंदी विभाग
शिवाजीकालेज,दिल्लीविश्वविद्यालय

हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती
'अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़- प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो!'
असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के- रुको न शूर साहसी!
अराति सैन्य सिंधु में, सुवाडवाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो - बढ़े चलो, बढ़े चलो!

हिमाद्रि तुंग श्रृंग --

विवेच्य कविता छायावाद के प्रमुख हस्ताक्षर व आधार भूत स्तंभ महाकवि प्रसाद के बहुचर्चित नाटक 'चंद्रगुप्त ' से ली गई है। इसमें प्रसाद ने भारत वासियों के अंदर वीर भावना का संचार किया है और उनके राष्ट्रीय भावना को उद्घाटित किया है। प्रसाद जी ने भारतवासियों में देशप्रेम और स्वतंत्रता के महत्व और उसे पाने के लिए उन्हें जागृत करते हुए कहा कि परतंत्र भारत माता अपनी वीर पुत्रों का आह्वान कर रही है कि वह अपनी समस्त शक्ति और दृढ़ संकल्प के साथ उसे स्वतंत्र कराने के लिए सामने आए।
हिमालय की ऊंची चोटियों से चैतन्य निर्मल बुद्धि सरस्वती (विवेक व ज्ञान का प्रतीक) अपने स्वंय के प्रकाश से आलोकित है। उसके समान ही उज्जवल , शुद्ध स्वतंत्रता अपने वीर पुत्रों को पुकार रही है।(यहां उपमा अलंकार है) सरस्वती सद्श पवित्र, शुद्ध , पावन स्वतंत्रता हमें विवेकशील बनाती है। स्वतंत्रता का भाव मनुष्य को विवेकशील व विकास शील बनाता है।

"अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़- प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो!'"

अमर्त्य (जो कभी मरता नहीं) अर्थात देवता। हम सब उसी आदि पुरुष मनु की संतान हैं जो

वीर है अतः देवता जिस प्रकार से कभी पराजित नहीं होते , उसी तरह तुम भी उसी की संतान होने के कारण अपराजेय हो। तुम प्रतिज्ञा करो कि तुम अपने प्राणों का उत्सर्ग करके भी स्वतंत्रता को प्राप्त करोगे। यहां पर कवि मात्र पुत्र भी कह सकते थे पर उन्होंने इसलिए से उपसर्ग लगाया क्योंकि वो कहना चाहते हैं कि तुम एक अच्छे पुत्र हो और एक अच्छे पुत्र का दायित्व होता है कि वह अपनी माता को कठिनाइयों से बाहर निकाले।

हिमालय की ऊंची चोटियों से भारत माता अपने को स्वतंत्र कराने के लिए अपने वीर पुत्रों को पुकार रही है । हिमालय जो हमारा रक्षक है किंतु अंग्रेजों ने हम पर अपना पूर्ण अधिकार कर लिया है अतः परतंत्र भारत माता अपनी स्वतंत्रता के लिए अपने पुत्रों का आह्वान कर रही है। यह स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। यह स्वतंत्रता हमें विकसित करती है अतः वीर पुत्रों तुम्हें दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ना चाहिए। अपनी माता की रक्षा करना और स्वतंत्रता प्राप्ति की ओर उठने वाला तुम्हारा कदम न केवल प्रशंसनीय है पुण्य भी है अतः दृढ़ता पूर्वक आगे बढ़ते चलो । एक न एक दिन तुम्हें स्वतंत्रता अवश्य मिलेगी। (यहां दो बार बड़े चलो आया है जिसका अर्थ है कि बिना मन में किसी प्रकार की शंका या द्वन्द के तुम आगे बढ़ते जाओ)

"असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के- रुको न शूर साहसी!"

.असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य (पवित्र पावन ऊष्मा की तरह जोश से युक्त)..... असंख्य कीर्ति रश्मियां से कवि का आशय है कि जो शूरवीर देश के लिए अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए शहीद हो जाते हैं उनकी यश रूपी किरणें पूरे वायुमंडल में फैलती है अर्थात इन शहीदों की यशगाथा युगों-युगों तक याद की जाती है। इन्हीं सपूतों की असंख्य यश की किरणें स्वतंत्रता प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। यह किरणें शत्रुओं के ह्रदय को बड़ी तेजी से नष्ट कर देने वाली हैं। (सूर्य जैसे स्वयं को जलाकर चारों ओर उजाला फैलाता है, उसी तरह जब स्वतंत्रता की जलधारा जलेगी तब भारत उसे पाकर स्वयं को प्रकाशवान अनुभव करेगा) यह किसने दिव्या ली है अतः कवि ने मातृभूमि के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने के लिए प्रेरणा दी है और ऐसे ही वीर हमेशा के लिए अमर हो जाते हैं। तुम भारत माता के सपूत हो इसलिए हे

वीर ! तुम रुको नहीं। साहस पूर्वक आगे बढ़ते चलो।

"अराति सैन्य सिंधु में, सुवाडवाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो - बढ़े चलो, बढ़े चलो!"

अराति (दुश्मन) सैन्य(सेना) सिंधु (समुद्र)में, सुवाडवाग्नि (समुद्र में लगने वाली आग) से जलो, प्रवीर--(उत्तम योद्धा) हो जयी(विजयी)बनो - बढ़े चलो, बढ़े चलो!

जिस प्रकार समुद्र में लगने वाली अग्नि निरंतर आगे बढ़ते हुए पूरे के पूरे समुद्र पर अपना एकाधिकार प्राप्त कर लेती है उसी प्रकार हे उत्तम वीर! तुम समुद्र के समान विशाल दुश्मनों की सेना पर समुद्र में लगने वाली अग्नि के समान उसे जलाते हुए , उसका विध्वंस करते हुए निरंतर आगे बढ़ते चलो।

कविता की विशेषता:-

1.अराति सैन्य (शत्रु रुपी सेना-- रुपक अलंकार

.प्रबुद्ध,(चेतना रुपी बुद्धि)--रुपक अलंकार

3.प्रवीर ,(प्र +वीर= उच्च श्रेणी के वीर)

4. सुपुत्र(सु +पुत्र= आज्ञाकारी पुत्र)

5.स्वतंत्रता का मानवीकरण नारी रुप में (जो कोमल , संवेदनशील, ममत्व से युक्त है)

6.संस्कृत निष्ठ भाषा

7. तत्सम शब्दावली।